TARGET with Alok

विद्यार्थी नहीं प्रशासक बनिए

An Online Institute for Civil Services

भारतीय इतिहास

(INDIAN HISTORY)

— By Satyam Tripathi

Call us :	Whatsapp
9721026382	9721026382
9717413295	9717413295
9170509670	9170509670
9170509671	9170509671
9670365889	9670365889
8736093317	8736093317
7860949547	7860949547
7388655387	7388655387
7880947856	7880947856
6389318812	6389318812
7081865829	7081865829
9918100665	9918100665

Director –

Alok Singh

Email. targetwithalokias@gmail.com

प्रारम्भिक इतिहास अवधारणा एवं परिचय

भारत के लिए **'इंडिया'** शब्द सबसे पहले हखमनियों/ईरानियों के द्वारा दिया गया बाद में यूनानियों ने **'इण्डोस'** नाम दिया, चीनियों ने इसे **''तिएन-चू''/ चु-उनां-तू/यिन तू** नाम दिया। पुराणों में विष्णु पुराण में भारत की अवधारणा वर्णित है।

''उत्तर यत्सयुद्रस्य हिमाद्रश्चैव दक्षिणं
वर्षतद् भारतनामा भारतीय यत्र संतति''

भौगोलिक विस्तार

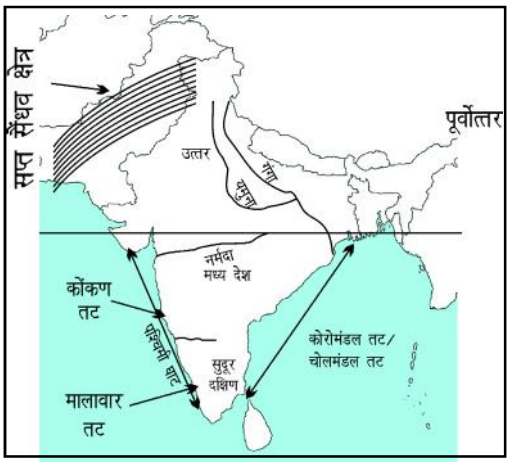

मनुस्मृति में निम्नलिखित क्षेत्रों की चर्चा की गयी है-

ब्रह्मावर्त - सरस्वती एवं दृशद्वती नदी के बीच का क्षेत्र।

ब्रहमर्षि देश - कुरू, मत्स्य, पांचाल, सूरसेन का क्षेत्र।

मध्य देश - उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विंध्याचल, पश्चिम में बीकानेर, पूरब में प्रयाग के बीच स्थित मध्य देश।

आर्यावर्त - पूर्वी एवं पश्चिमी समुद्रों के बीच तथा उत्तरी हिमालय एवं दक्षिणी समुद्र के बीच का क्षेत्र आर्यावर्त कहलाता है।

TARGET with Alok

भारत के इतिहास पर भूगोल का प्रभाव -

भारतवर्ष के भूगोल का इसके इतिहास पर प्रभाव प्रत्येक स्थल एवं घटनाओं में अंकित हैं उत्तर में स्थित हिमालय पर्वत महान प्रहरी के रूप में भारत की रक्षा विदेशी आक्रमणों से करता है। हिमालय के समान अभेद्य सीमा, प्रकृति ने किसी और देश को प्रदान नहीं किया है। कालिदास ने हिमालय के विषय में कहा है कि - ''पर्वतों का राजा हिमालय अध्यात्मवाद को धारण किए हुए दो समुद्रों के बीच ऐसे खड़ा है जिसे कि पृथ्वी को नापने वाला डण्डा हो।''

हिमालय के उत्तर-पश्चिम में स्थित सुलेमान एवं हिन्दुकुश जैसे कम ऊंचे पर्वतों में कई ऐसे दर्रे हैं जिनसे होकर ग्रीक, शक, कुषाण, हूण, अरबी, तुर्क, मंगोल, अफगान एवं मुगल भारत पर आक्रमण किये। इस भाग के मुख्य दर्रे खैबर, कुर्रम, बेलन, टोची, गोमल आदि हैं।

हिमालय के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित पहाड़ी दर्रों को पार करना अत्यन्त कठित है। इन दुर्गम पहाड़ी दर्रों को पार कर बर्मा पर अधिकार करने का प्रयास कभी किसी भारतीय शासक ने नहीं किया। दूसरे विश्व युद्ध में, भारतीय सेनाओं ने इन दर्रों को पार करने का प्रयास किया, परिणामस्वरूप काफी लोग मार्ग में ही काल कवलित हो गये। सिन्धु एवं गंगा के मैदान चूंकि बहुत ही उपजाऊ एवं समृद्धिशाली थे इसलिए इसी भाग में बड़े-बड़े साम्राज्य की स्थापना हुई।

सतलज एवं यमुना नदियों के मध्य का क्षेत्र जो शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी से कुरूक्षेत्र एवं राजपूताना तक फैला हुआ है, पर कब्जा करने के लिए महाभारत एवं पानीपत की क्षेत्र की महत्वपूर्ण लड़ाईयां लड़ी गयीं।

Call us : 9721026382, 9717413295, 9170509670, 9170509671, 9670365889, 8736093317, 7860949547, 7388655387, 7880947856, 6389318812, 7081865829, 9918100665
Whatsapp us : 9721026382, 9717413295, 9170509670, 9170509671, 9670365889, 8736093317, 7860949547, 7388655387, 7880947856, 6389318812, 7081865829, 9918100665

उत्तर भारत की राजनीतिक उथल-पुथल का दक्षिण भारत पर जरा-सा भी प्रभाव नहीं पड़ा। जिस समय उत्तर भारत में आर्य लोग निवास कर रहे थे, उस समय दक्षिण भारत द्रविड़ संस्कृति अगस्त्य ऋषि द्वारा लायी गयी। जब भी भारतीय संस्कृति को छिपाकर इसी रक्षा की। जिस समय बौद्ध मत उत्तर भारत में अपने चरमोत्कर्ष पर था उस समय दक्षिण ने हिन्दू मत को पनाह देकर उसकी रक्षा की कालान्तर में जैन मतावलम्बियों को भी दक्षिण में ही शरण मिली। दक्षिण भारत के समुद्री तटों पर स्थित बन्दरगाहों से भारत का विदेशी व्यापार फला-फूला।

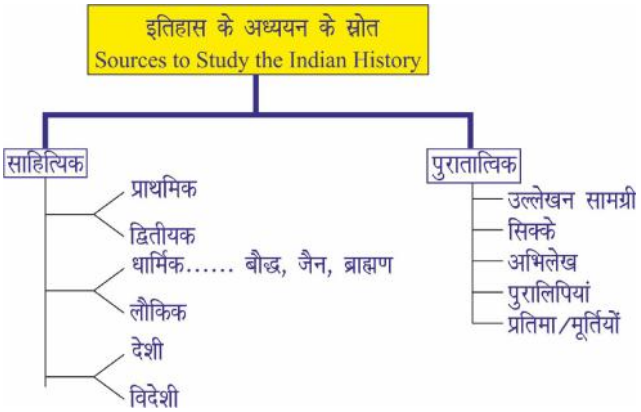

साहित्यिक स्रोत

- प्राथमिक साहित्य साक्ष्य वे होते हैं जो कि समकालीन होते हैं, उदाहरण के लिए मौर्य साम्राज्य के अध्ययन के लिए कौटिल्य का अर्थशास्त्र एवं मेगस्थनीज की इंडीका प्राथमिक स्रोत हैं। द्वितीय साक्ष्य वे साक्ष्य है जो कि घटना के बाद लिखे जाते हैं। प्राथमिक साक्ष्य का महत्व तुलनात्मक रूप से अधिक होता है
- धार्मिक साहित्य मुख्यतः किसी धर्म से सम्बन्धित होते हैं उदाहरण के लिए ब्राह्मण धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म। यह मुख्यतः सांस्कृतिक पक्ष से सम्बन्धित होते हैं जबकि लौकिक साहित्य वे साहित्य होते हैं जिनका सम्बन्ध धर्म से नहीं होता बल्कि अर्थव्यवस्था राजनीति समाज से संबंधित होते है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र प्रथम लौकिक रचना मानी जाती है।
- भारतीय इतिहासकारों के द्वारा लिखा गया साहित्य देशी साहित्य के अन्तर्गत है जबकि विदेशी साहित्यकारों के द्वारा लिखा गया साहित्य विदेशी साहित्य कहा जाता है। भारत में युनानियों चीनीयों एवं अरबी तथा तिब्बती इतिहासकारों के द्वारा इतिहास लिखा गया।

साहित्यिक स्रोतों का सर्वेक्षण

धर्म–ग्रन्थ

प्राचीन कला से ही भारत के धर्म प्रधान देश होने के कारण यहां प्रायः तीन धारायें– वैदिक, जैन एवं बौद्ध प्रवाहित हुई। वैदिक धर्म गन्थ को ब्राह्मण ग्रन्थ भी कहा जाता है।

ब्राह्मण धर्म ग्रन्थ

ब्राह्मण धर्म ग्रन्थ के अन्तर्गत वेद, उपनिषद, महाकाव्य तथा स्मृति ग्रन्थों को शामिल किया जाता है।

वेद– वेद एक महत्वपूर्ण ब्राह्मण धर्म–ग्रन्थ हैं। वेद शब्द का अर्थ 'ज्ञान', महत्ज्ञान अर्थात् 'पवित्र एवं आध्यात्मिक 'ज्ञान' है। यह शब्द संस्कृत के 'विद्' धातु से बना हैं जिसका अर्थ है जानना। वेंदों के संकलनकर्ता कृष्ण द्वैपायन थे। **कृष्ण द्वैपायन** को वेदों के पृथक्करण–व्यास के कारण **वेदव्यास** की संज्ञा प्राप्त हुई। वेदों से ही हमें आर्यो के विषय में प्रारंभिक जानकारी मिलती है। कुछ लोगों को वेदों को अपौरूषेय अर्थात् दैवकृत मानते हैं। वेदों की कुल संख्या चार है– **ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद।**

ऋग्वेद– चारों वेदों में सर्वाधिक प्राचीन वेद ऋग्वेद से आर्यो की राजनीतिक प्रणाली एवं इतिहास के विषय में जानकारी मिलती है। ऋग्वेद अर्थात् ऐसा ज्ञान जो ऋचाओं से बद्ध हो। मण्डल क्रम में समस्त ग्रन्थ 10 मण्डलों में विभाजित है। मण्डल अनुवाक, अनुवाक, सूक्त तथा सूक्त मंत्र या ऋचाओं मे विभाजित है। दसों मण्डलों में 85 अनुवाक ओर 1028 सूक्त हैं 1028 सूक्तों में 11 **बालखिल्य सूक्त** शामिल है। ऋग्वेद के समस्त सूक्तों के ऋचाओं (मंत्रो) की संख्या 10,552 (लगभग 1.,600) है। ऋग्वेद की प्रत्येक ऋचाके साथ उससे सम्बन्धित ऋषि और देवता का नाम भी दिया गया है। सूक्तों के पुरूष रचियताओं में गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भारद्वाज और वसिष्ठ तथा स्त्री रचयिताओं में लोपामुद्रा, घोषा, अलापा, अगस्त्य ऋषि से हुई थी। ऋग्वेद के **दूसरे एवं सातवें मण्डल की ऋचायें सर्वाधिक प्राचीन हैं,** जबकि **पहला एव दसवां मण्डल अन्त** में जोड़ा गया है। ऋग्वेद के आठवें मण्डल में मिली हस्तलिखित प्रतियों के परिशिष्ट को 'खिल' कहा गया है। ऋग्वेद के सूक्त तत्कालीन सभ्यता एवं संस्कृति की जानकारी के प्रामाणिक स्त्रोत है।

ऋग्वेद भारत की ही नही सम्पूर्ण विश्व की प्राचनीतम रचना हैं इसकी तिथि 1500 से 1000 ई.पू. मानी जाती है। **ऋग्वेद और इरानी ग्रन्थ जेंद अवेस्ता** में समानता पायी जाती है। ऋग्वेद के अधिकांश भाग में देवताओं की स्तुतिपरक ऋचांए है। यद्यपि उनमें ठोस ऐतिहासिक सामग्री बहुत

Log in. targetwithalok.in for
General Studies and Current Affairs Notes

कम मिलती है, फिर भी इसके कुछ मंत्र ठोस ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध कराते हैं जैसे एक स्थान पर '**दाशराज युद्ध**' जो भरत कबीले के राजा सुदास एवं पुरूष कबीले के मध्य हुआ था, का वर्णन किया गया है। भरत जन के नेता सुदास के मुख्य पुरोहित वशिष्ठ थे, जबकि इनके विरोधी दस जनो (आर्य और अनार्य) के संघ के पुरोहित विश्वामित्र थे। दस जनों के संघ में पांच जनों के अतिरिक्त –अलिन, पक्थ, भलानसु, शिव तथा विषाणिन् के राजा सम्मिलत थे। भरत जन का राजवंश त्रित्सुजन मालूम पड़ता हैं, जिसके प्रतिनिधि देवदास एवं सुदास थे। भरत जन का राजवंश त्रित्सुजन मालुम पड़ता है। जिसके प्रतिनिधि देवदास एवं सुदास थे। भरत जन के नेता सुदास रावी (परूष्णी) नदी के तट पर दस राजाओं के संघ को पराजित कर ऋग्वैदिक भारत के चक्रवर्ती शासक के पद पर अधिष्ठित हुए। ऋग्वेद में यदु, द्रह्यु, तुर्वश, पुरू और अनु पांच जनों का वर्णन मिलता है।

ऋग्वेद के मंत्रों का उच्चारण यज्ञों के अवसर पर **होतृ ऋषियों** के द्वारा किया जाता था। ऋग्वेद की अनेक संहिताओं के **संप्रति संहिता** ही उपलब्ध हैं संहिता का अर्थ संकलन होता हैं। ऋग्वेद की पांच शाखांए हैं– **शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन** तथा **मांडुकायन**। ऋग्वेद के कुल मंत्रों की संख्या लगभग 10600 है। बाद में जोड़े गए **दशम मंडल, जिसे 'पुरूषसूक्त'** के नाम से जाना जाता है, में सर्वप्रथम सूदों का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त नासदीय सूक्त (सृष्टि विषयक जानकारी, निर्गुण ब्रह्म की जानकारी) विवाह सूक्त (ऋषि दीर्धमाह द्वारा रचित), नदि सूक्त (वर्णित सबसे अन्तिम नदी गोमल), देवी सूक्त आदि का वर्णन इसी मण्डल में है। इसी सूक्त में दर्शन की अद्वैत धारा के प्रस्फुटन का भी आभाास होता है। सोम का उल्लेख नवें मंडल में है। ''मै कवि हूं, मेरे पिता वैद्य है, माता अन्न पीसने वाली है'' यह कथन इसी मण्डल में हे। लोकप्रिय गायत्री मंत्र (सावित्री) का उल्लेख भी ऋग्वेद के 7वें मण्डल में किया गया है। इस मण्डल के रचयिता **वशिष्ठ** थे। यह मण्डल वरूण देवता को समर्पित है।

वेद

वेद चार है–

1. **ऋग्वेद**– यह ऋचाओं का संग्रह है।
2. **सामवेद**– यह गीति/रूप मंत्रों का संग्रह है। और इसके अधिकांश गीत ऋग्वेद से लिए गए हैं।
3. **यजुर्वेद–** इसमें योगानुष्ठान के लिए विनियोग वाक्यों का समावेश है।
4. **अथर्ववेद–** यह तंत्र–मंत्र का संग्रह है।

सामवेद– 'साम' शब्द का अर्थ है 'गान'। सामवेद में संकलित मंत्रों को देवताओं की स्तृति के समय गाया जाता था। सामवेद मे कुल 1875 ऋचायें हैं जिनमें 75 के अतिरिक्त शेष ऋग्वेद से ली गयी हैं इन ऋचाओं का गान सोमयज्ञ के समय 'उद्गाता करते थे। सामवेद की तीन महत्वपूर्ण शाखाएं हैं– **कौथुमीय, जैमिनीय एवं राणायनीय।** भारतीय संगीत के इतिहास के क्षेत्र में सामवेद का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसे भारतीय **संगीत का मूल** कहा जा सकता हैं सामवेद का प्रथम द्रष्टा ओर वेद व्यास के शिष्य जैमिनी को माना जाता है।

यजुर्वेद– 'यजुष' शब्द का अर्थ है 'यज्ञ'। यजुर्वेद मूलतः कर्मकाण्ड ग्रन्थ है। इसमें मूल रूप से याज्ञिक मंत्रों का संकलन किया गया है। इसकी रचना कुरूक्षेत्र में मानी जाती है। यजुर्वेद को आयोग की धार्मिक एवं सामाजिक जीवन की झांकी मिलती हैं इस ग्रन्थ सेू पता चलता हैं कि आर्य सप्त सैंधव से आअगे बढ़ गए थे। और वे प्राकृतिक पूजा के प्रति उदासीन होने लगे थे। यजुर्वेद के मंत्रो का उच्चारण 'अध्वुर्य' नामक पुरोहत करता था। इस वेद में अनेक प्रकार के यज्ञों को सम्पन्न करने की विधियों का उल्लेख है। यह गद्य तथा पद्य दोनों में लिखा गया है। गद्य को 'यजुष' कहा गया है। यजुर्वेद के दो मुख्य भाग है– **शुक्ल यजुर्वेद एवं कुष्ण यजुर्वेद।**

ऋग्वेद के मण्डल एवं उसके रचयिता

मण्डल	रचयिता
प्रथम मण्डल	अनेक ऋषि
द्वितीय मण्डल	गृत्सवमद
तृतिय मण्डल	विश्वामित्र
चतुर्थ मण्डल	वामदेव
पंचम मण्डल	अत्रि
षष्ठम मण्डल	भारद्वाज
सप्तम मण्डल	वसिष्ठ
अष्ठम मण्डल	कण्व व अंगिरा
नवम् मण्डल (पावमान मण्डल)	अनेक ऋषि
दशम मण्डल	अनेक ऋषि

(क) शुक्ल यजुर्वेद– इसमें कवेल दर्शपौर्णमासादि अनुष्ठानों के लिए आवश्यक मंत्रों का संकलन है। इसकी मुख्य शाखायें है। – माध्यान्दिन तथा काण्व। इसकी संहिताओ को वाजसनेय भी कहा गया है क्योंकि वाजसनि के पुत्र याज्ञवल्क्य वाजसनेय इसके दृष्टा थे। इसमें कुल 40 अध्याय हैं।

(ख) कृष्ण यजुर्वेद– इसमें मंत्रों के साथ–साथ तन्त्रियोजक ब्राह्मणों का भी सम्मिश्रण हैं। वास्तव में मंत्र तथा ब्राह्मण का एक मिश्रण ही कृष्ण यजुः के कृष्णत्व का कारण हैं तथा मंत्रों का विशुद्ध एवं अमिश्रित रूप ही शुक्ल यजुष् के शुक्लत्व का कारण हैं। इसकी मुख्य शाखायें हैं तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक और कपिष्ठल।

तैत्तरीय संहिता (कृष्ण यजुर्वेद की शाखा) को आपस्तम्ब् संहिता भी कहते है। महर्षि पतंजलि द्वारा उल्लिखित यजुर्वेद की 101 शाखाओं मे इस समय के वल उपरोक्त पांच वाजसनेय, तैत्तिरीय, काठक, कपिष्ठल और मैत्रायणी ही उपलब्ध हैं। यजुर्वेद से उत्तरवैदिक युग की राजनीतिक, सामाजिकम एवं धार्मिक जीवन की जानकारी मिलती है।

Call us : 9721026382 9717413295 9170509670 9170509671 9670365889 8736093317 7860949547 7388655387 7880947856 6389318812 7081865829 9918100665
Whatsapp us : 9721026382 9717413295 9170509670 9170509671 9670365889 8736093317 7860949547 7388655387 7880947856 6389318812 7081865829 9918100665

अथर्ववेद– इसकी रचना **अर्थवर्ण** और **आंग्डरस** ऋषियों द्वारा की गयी हैं इसलिए अथर्ववेद को **अथर्वाग्डिरसवेद** भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त अथर्ववेद को अन्य नामों से भी जाना जाता है–

1. गोपथ ब्राह्मण में इसे **अथर्वाग्ड्रसवेद** कहा गया है।
2. ब्रह्म विषयक होने के कारण इसे ब्रह्मदेव भी कहा जाता है।
3. आयुर्वेद, चिकित्सा, औषधियों आदि के वर्णन होने के कारण इसे भैषज्य वेद भी कहा जाता है।
4. पृथ्वी सूक्त इस वेद का अति महत्वपूर्ण सूक्त है। इस कारण इसे महीवेद भी कहते है।

अथर्ववेद में कुल 20 काण्ड, 730 सूक्त एवं 5,987 मंत्र है। यह वेद भौतिकवादी विषयों, दशर्न एवं अध्यात्मवाद का चिन्तन प्रस्तुत करता है। इसमें 'वास्तुशास्त्र' का बहुमूल्य ज्ञान उपलब्ध हैं इस वेद के महत्वपूर्ण विषय हैं– ब्रह्मज्ञान, औषधि प्रयोग, रोग निवारण, जन्त–मन्त्र, टोना–टोटका आदि। अथर्ववेद में परीक्षित को कुरूओं का राजा कहा गया है। तथा इसमें कुरू देश की समृद्धि का अच्छा चित्रण मिलता है। इस वेद में आर्य एवं अनार्य विचार–धाराओं का समन्वय है। उत्तर वैदिक काल में इस वेद का विशेष महत्व है। ऋग्वेद के दार्शनिक विचारों का प्रौढ़ रूप इसी वेद में प्राप्त हुआ है। अथर्ववेद में सर्वाधिक उल्लेखनीय विषय आयुर्विज्ञान हैं इसके अतिरिकत जीवाणु–विज्ञान तथा औषधियों आदि के विषय में जानकारी इसी वेद से होती है। भूमि सूक्त के द्वारा राष्ट्रीय भावना का सृदृढ़ प्रतिपादक सर्वप्रथम इसी वेद में हुआ है। इस वेद की दो अन्य शाखायें है– पिप्ललाद एवं शौनक। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद, इन चारों वेदों को संहिता कहा जाता हैं इनमे ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद के सम्मिलित संग्रह को वेदत्रयी कहा जाता है।

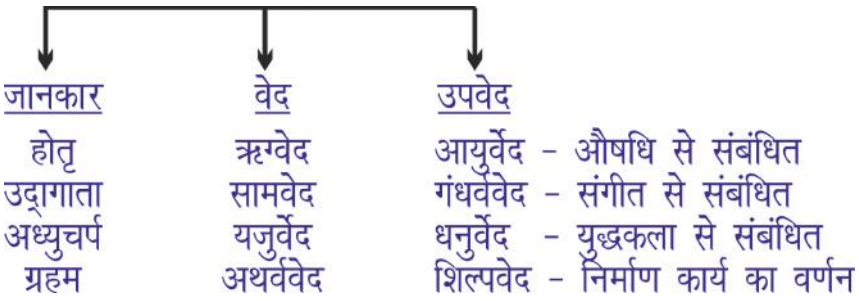

- ❖ यज्ञ एवं कर्मकाण्ड की जानकारी
- ❖ ब्राह्मण को वेद की कुँजी कहा जाता हैं।
- ❖ यज्ञों की वैज्ञानिक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक मीमांसा प्रस्तुत की गई है।
- ❖ इसके अधिकतर ग्रन्थों का संकलन गद्य में किया गया है।
- ❖ इससे उत्तरकालीन समाज तथा संस्कृति की जानकारी मिलती है।

वेद एवं सम्बन्धित ब्राह्मण

वेद	**सम्बन्धित ब्राह्मण**
ऋग्वेद	ऐतरेय ब्राह्मण, कौषीतकि ब्राह्मण
शुक्ल यजुर्वेद	शतपथ ब्राह्मण
कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय ब्राह्मण
सामवेद	पंचविष ब्राह्मण, षड्विथ ब्राह्मण, सामविधान ब्राह्मण, जैमिनीय, ब्राह्मण
अथर्ववेद	गोपथ ब्राह्मण

प्रत्येक वेद (संहिता) को अपने–अपने ब्राह्मण होते हैं, जैसे– ऋग्वेद के ऐतरेय एवं कौषीतकि ब्राह्मण, शुक्लयजुर्वेद के शतपथ, सामविधान ब्राह्मण, वंश ब्राह्मण, जैमिनीय ब्राह्मण, आदि तथा अथर्ववेद के गोपथ ब्राह्मण।

ब्राह्मण ग्रन्थों से हमें परीक्षित के बाद और बिम्बिसार के पूर्व की घटनाओं का ज्ञान प्राप्त होता हैं ऐतरेय ब्राह्मण में राज्याभिषेक के नियम दिये गए हैं। प्राचीन इतिहास के साधन के रूप में वैदिक साहित्य में ऋग्वेद के बाद सतपथ ब्राह्मण का स्थान हैं शतपथ ब्राह्मण में गंधार, शल्य, कैकेय, कुरू, पांचाल, कोशल, विदेह आदि राजाओं के नाम का उल्लेख है।

ऋग्वेद के ब्राह्मण

1. ऐतरेय ब्राह्मण– इसकी रचना महर्षि ऐतरेय द्वारा की गई थी, जिस पर सायणाचार्य ने अपना भाष्य लिखा है। इस ग्रन्थ से यह पता चलता है। कि उस समय पूर्व में विदेह जाति का राज्य था जबकि पश्चिम में नीच्य और अपाच्य राज्य थे। उत्तर मे कुरू और मद्र का तथा दक्षिण में भोज्य राज्य था।

2. **कौषितिकी ब्राह्मण–** कौषीतिकी ब्राह्मण को शंखायन ब्राह्मण भी कहते है। इसकी रचना का श्रेय शंखायन अथवा कौषीतिकी को जाता है। अतः यह ऋग्वेद की वाष्कल शाखा से सम्बन्धित है। यह 30 अध्यायों में विभक्त है और 226 खण्ड है। इस ग्रन्थ में अनय ब्राह्मण ग्रन्थों की भांती मानवीय आचार के नियम और निर्देश दिए गए है।

Log in. targetwithalok.in for
General Studies and Current Affairs Notes

यजुर्वेद के ब्राह्मण

1. शतपथ ब्राह्मण – शतपथ ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेद के दोनो शाखाओं काण्व व माध्यन्दिनी से सम्बद्ध हैं यह सभी ब्राह्मण गन्थों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसके रचयिता याज्ञवल्क्य को माना जाता है।

इसमें गंधार, कैकय और शाल्व जनपदों की विशेष चर्चा की गई है। अन्य काण्डों में आर्यावर्त के मध्य तथा पूर्वी भाग कुरू, पांचाल, कोसल, विदेह, सृजन्य, आदि जनपदों का उल्लेख हे। शतपथ ब्राह्मणमें यज्ञों को जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कृत्य बताया गया है। अश्वमेघ या के सन्दर्भ में अनेक प्राचीन सम्राटों का उल्लेख है, जिसमें जनक, दुष्यन्त, और जनमेजय का नाम महत्वपूर्ण हैं।

2. तैत्तिरीय ब्राह्मण– तैत्तिरीय ब्राह्मण कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा से सम्बन्धित हें इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण आख्यान महर्षि भारद्वाज से सम्बन्धित हैं तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार मनुष्य का आचरण देवों के समान होना चाहिए। इस ग्रन्थ में मन को ही सर्वोच्च प्रजापति बताया गया है।

सामवेदीय ब्राह्मण

1. ताण्ड्य ब्राह्मण– ताण्ड्य नामक आचार्य द्वारा रचे जाने के कारण इसे ताण्ड्य ब्राह्मण कहा गया। इसकी विशालता के कारण इसे महाब्राह्मण भी कहते हे। इसमें 25 अध्याय होने के कारण इसे पंचविश भी कहा जाता है। इसका प्रमुख प्रतिपा़द्य विषय सोमयोग है। सरस्वती के पुनः विलुप्त होने तथा पुनः प्रकट जहोने का उल्लेख ताण्ड्य ब्राह्मण में मिलता है।

2. षड्विश ब्राह्मण– यह ब्राह्मण सामवेद के कौथुम शाखा से सम्बन्धित है। सायण ने इसे अपने भाष्य में ताण्डक कोष कहा हैं इसमें 6 अध्याय हैं इसलिए इसे षड्विंश ब्राह्मण कहते हे। इसके पंचम प्रपाठक को अद्भुत ब्राह्मण के नाम से भी जाना जाता हैं इसमें भूकम्प, अकाल आदि को वर्णन किया गया है।

3.जैमिनीय ब्राह्मण– जैमिनीय ब्राह्मण में ही वह प्रसिद्ध सूक्ति है। जिसका तात्पर्य हैं कि ऊंचें मत बोलों, भूमि अथवा दीवार के भी कान होते है।

अथर्ववेद के ब्राह्मण

1. गोपथ ब्राह्मण– अथर्ववेद का यह एक मात्र ग्रन्थ हैं। ऋषि गोपथ द्वारा इस ग्रन्थ की रचना की गई थी। गोपथ ब्राह्मण में अग्निष्टोम, अश्वमेघ जैसे यज्ञों के विधि–विधान के अतिरिकत ओंकार तथा गायत्री महिला का वर्णन हैं कैवल्य की अवधारणाा की उल्लेख इसी ब्राह्मण में हैं।

आरण्यक–

- ❖ अध्यात्म एवं चितंन तथा दर्शन इन ग्रन्थों का अभिष्ट विषय है।
- ❖ आरण्यकों में दार्शनिक एवं रहस्यात्मक विषयों यथा, आत्मा, मृत्यु, जीवन आदि का वर्णन है।
- ❖ इन गन्थों को आरण्यक इसलिए कहा गया है। क्योंकि इन ग्रन्थों का मनन अरण्य अर्थात् वन में किया जाता था।
- ❖ ये गन्थ अरण्यों (जंगलों) में निवास करने वाले सन्यासियों के मार्गदर्शन के लिए लिखे गए थे।

वेद एव सम्बन्धित अरण्यक

वेद	सम्बन्धित अरण्यक
ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषीतकि
यजुर्वेद	बृहदारण्यक, मैत्रायणी, तैत्तिरीयारण्यक
सामवेद	जेमिनीयोनिषद् या तवलकार आरण्यक
अथर्ववेद	कोई आरण्यक नहीं

उपनिषद–

- ❖ इसका शाब्दिक अर्थ है– 'समीप बैठना'। अर्थात् ब्रह्म विद्या को प्राप्त करने के लिए गुरू के समीप बैठना।
- ❖ इस प्रकार उपनिषदृ एक ऐसा रहस्य ज्ञान है जिसे हम गुरू के सहयोग से ही समझ सकते है।
- ❖ ब्रह्म विषयक होने के कारण इन्हें **ब्रह्मविद्या** भी कहा जाता है।
- ❖ उपनिषदों में आत्मा–परमात्मा एवं संसार के संदर्भ में प्रचलित दार्शनिक विचारों का संग्रह मिलता है। उपनिषदृ के अनुसर आत्मा परमात्मा का ही अंश हैं। प्रत्येक प्राणी की आत्मा में वहीं ब्रह्म 'स्व' के रूप में प्रतिस्थापित है।
- ❖ 'उपनिषद् वैदिक साहित्य के अंतिम भाग तथा सारभूतसिद्धांतो के प्रतिपादक हैं अतः इनहें **वेदान्त** भी कहा जाता है।
- ❖ उपनिषदों ने जिस निष्काम कर्म मार्ग और भक्ति माग्र का दर्शन दिया उसका विकास भगवत्गीता में हुआ। उपनिषदों की कुल संख्या 108 है।
- ❖ शंकराचार्य ने जिन 10 उपनिषदों पर अपना भाष्य लिखा हैं उनकों प्रामाणिक माना गया हैं ये हैं–ईश, केन, कठ, प्रश्न, माडूक्य, मुण्डक, तैत्तिरीय ऐतरये, छान्दोग्य और बृहदारण्यक उपननिषद्। इसके अतिरिकत कौषीतकि और श्वेताश्वर उपनिषद् भी महत्वपूर्ण हैं।
- ❖ भारत का प्रसिद्ध राष्ट्रीय आदर्शवाक्य **'सत्यमेव जयते'** मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है।
- ❖ उपनिषद् गद्य और पद्य दोनों में है–
- ❖ जिसमें प्रश्न, माडूक्य, केन, तैत्तिरीय, ऐतरेय छांदोग्य, बृहदारण्यक और कौषीतकि उपनिषद गद्य में तथा केन, ईश, कठ और श्वेताश्वर उपनिषद् पद्य में हैं।

Call us : 9721026382, 9717413295, 9170509670, 9170509671, 9670365889, 8736093317, 7860949547, 7388655387, 7880947856, 6389318812, 7081865829, 9918100665
Whatsapp us : 9721026382, 9717413295, 9170509670, 9170509671, 9670365889, 8736093317, 7860949547, 7388655387, 7880947856, 6389318812, 7081865829, 9918100665

उपनिषदों की प्रमुख बातें

ऐतरेतय उपनिषद– सृष्टि की उत्पत्ति ब्रह्म से बताई गयी है।

कौषीतिकी उपनिषद– इसमें विंध्याचल की चर्चा है।

छांदोग्य उपनिषद – श्वेत केतु – जाबालि संवाद।

- पुनर्जन्म का प्राचीनतम उल्लेख मिला है।

कठोपनिषद – भक्ति का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है।

- यम–नचिकेता संवाद की चर्चा इसमें है।

ईशोपनिषद – यह यजुर्वेदे का 40वां अध्याय है।

श्वेताश्वर उपनिषद – सांख्य दर्शन के संबंध में चर्चा है।

मैत्रायणी उपनिषद – सांख्य दर्शन के संबंध में चर्चा है।

मुण्डक उपनिषद – 'सत्यमेव जयते' इसी उपनिषद द्वैतवाद की चार्चा है।

माण्डूक्य उपनिषद– यह सबसे छोटा उपनिषद हैं। यज्ञ जर्जर नौका की भांति है।

केन उपनिषद – उमा का शिव की पत्नी के रूप में चर्चा है।

प्रश्नोपनिषद – पिप्पालद मुनि एवं 6 अन्य ऋषियों की चर्चा है।

वेदांग–

वेदांगों की रचना उत्तर वैदिक काल में हुई।

ख ये ग्रन्था वास्तव में वेदों के ज्ञान एवं रहस्य का सरल रूप प्रदान करते हैं।

ख वेदों के अर्थ को अच्छी तरह समझने में वेदांग काफी सहायक होते है।

वेदांगों के प्रकार

1. शिक्षा, 2. कल्प, 3. व्याकरण, 4. निरूक्त, 5. छन्द और 6. ज्योतिष।

1. शिक्षा– वैदिक वाक्यों के स्पष्ट उच्चारण हेतु इसका निर्माण हुआ।

2. कल्प– वैदिक कर्मकाण्डों को सम्पन्न करवानों के लिए निश्चित किए गए विधि नियमों का प्रतिपादन कल्पसूत्र में किया गया है।

3. व्याकरण– इसके अन्तर्गत समासों एवं संधि आदि के नियम, नामों एवं धातुओं की रचना, उपसर्ग एव ंप्रत्यय के प्रयोग आदि के नियम बताये गए हैं। पाणिनी की **अष्टाध्यायी** प्रसिद्ध व्याकरण ग्रन्थ है।

4. निरूक्त– शब्दों की व्युत्पति एवं निर्वचन बतलाने वाले शास्त्र निरूक्त कहलाते हैं। क्लिष्ट वैदिक शब्दों के संकलन **'निघण्टु'** की व्याख्या हेतु **यास्क** ने निरूक्त की रचना की थी, जो भाषा शास्त्र का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है।

5. छन्द–वैदिक साहित्य में मुख्य रूप से गायत्री, त्रिष्टुप, जगती, वृहती आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। पिंगल का छन्दशास्त्र प्रसिद्ध है।

6. ज्योतिष– इसमें ज्योतिषशास्त्र के विकास को दिखाया गया है। इसके प्राचनीतम् आचार्य **लगध मुनि** हैं।

सूत्र– सूत्रों ममें पाक्षिक विधानों, मनुष्य के कर्तव्यों, वर्णाश्रम व्यवस्था एवं सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है। इन सूत्रों की संख्या तीन है– स्त्रोत सूत्र, गृह सूत्र एवं धर्म सूत्र।

धर्मशास्त्र– ब्रह्मण ग्रन्थों में धर्मशास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान है। धर्मशास्त्र में धार्मिक नियमों एवं सामाजिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। इन ग्रन्थों में विष्णु धर्मशास्त्र, मानव धर्मशास्त्र, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति आदि प्रमुख है।

धर्मशास्त्र में चार साहित्य आतें है–धर्म सूत्र, स्मृति, टीका एवं निबन्ध।

स्मृतियां– स्मृतियों को 'धर्म शास्त्र' भी कहा जाता है। –श्रस्तु वेद विज्ञेयों धर्मशास्त्रं तु वैस्मृतिः। स्मृतियों का उदय सूत्रों के बाद हुआ। मनुष्य के पूरे जीवन से सम्बन्धित अनेक क्रिया–कलापों के बारे में असंख्य विधि–निषेधों की जानकारी इन स्मृतियों से मिलती हैं सम्भवतः मनुस्मृति (लगभग 200 ई.पू. से 100 ई. मध्य) एवं याज्ञवल्क्य स्मृति सबसे प्राचीन है। उस समय के अन्य महत्वपूर्ण स्मृतिकार थे– नारद, पाराशर, बृहस्पति, कात्यायान, गौतम, संवर्त, हारीत, अंगिरा आदि जिनका समय सम्भवतः 100 ई. से लेकर 600 ई. तक था। मनुस्मुति से उस समय के भारत के बारे में राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक जानकारी मिलती हैं नारद स्मृति से गुप्त वंश के संदर्भ में जानकारी मिलती हैं। **मेधातिथि, भारूचि, कुल्लुक भट्ट, गोविन्दराज** आदि टीकाकारों ने मनुस्मृति पर, जबकि **विश्वरूप, अपरार्क, विज्ञानेश्वर** आदि ने **याज्ञवल्क्य स्मृति** पर भाष्य लिखे है।

Log in. targetwithalok.in for
General Studies and Current Affairs Notes

मुख्य निबन्धकार एवं रचनाएं	
निबंधकार	**रचनाएं**
देवण्णभट्ट	स्मृतिचन्द्रिका
श्रीदत्त उपाध्याय	आचारादर्श
माध्वाचार्य	पाराशरमाधवीय
जीमूतवाहन	दायभाग
रघुनन्दन	स्मृतित्व

महाकाव्य–

रामायण– रामायण की रचना महर्षि बाल्मीकि द्वारा पहली एवं दूसरी शताब्दी के दौरान संस्कृत भाषा में की गयी। बाल्मीकि कृत रामायण में मूलतः 6000 श्लोक थे, जो कालान्तर में 12000 हुए और फिर 24000 हो गयें इसे **'चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता'** भी कहा गया है। बाल्मीकि द्वारा रचित रामाया में अयोध्या के राजा राम का वर्णन हैं यह महाकाव्य– बालकाण्ड, अयोध्याकाण्डा, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड नामक सात काण्डों में बंटा हुआ है। सर्पप्रथम भारत से बाहर चीन में किया गया। भुशुण्डि रामायण को **आदिरामायण** कहा जाता है।

महाभारत– महर्षि व्यास द्वारा रचित महाभारत महाकाव्य रामायण से वृहद है। इसकी रचना का मूल समय ईसा पूर्व चौथी शताब्दी माना जाता है। महाभारत में मूलतः 8800 श्लोक थे। तथा इसका नाम **'जयसंहिता'** (विजय संबंधी ग्रन्थ) था। बाद में श्लोकों की संख्या 2400 होने के पश्चात ये वैदिक जन भरत के वंशजों की कथा हाने के कारण **'भारत'** कहलाया। महाभारत का प्रारंभिक उल्लेख **'आश्वलायन गृहसूत्र** में मिलता है। वर्तमान में इस महाकाव्य में लगभग एक लाख श्लोकों का संकलन है। महाभारत महाकाव्य में कौरव–पाण्डव युद्ध का वर्णन किया गया है। यह महाकाव्य 18 पर्वों– आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शांति, अनुशासन, अश्वमेघ, आश्रमवासी, मौसल, महाप्रास्थानिक एवं स्वर्गारोहण में विभाजित है।

पुराण– प्राचीन आख्यानों से युक्त ग्रन्थ को पुराण कहते हैं संभवतः 5वीं से चौथी शताब्दी ई.पू. तक पुराण अस्तित्व में आ चुके थे। पुराणों में प्राचीन महापुरूषों देवताओं ऋषियों, धार्मिक नियमों, रानीतिक विषयों एवं मानव–जीवन के आदर्शो, वंश मन्वतन्त तथा वंशानुचरितं इस प्रकार प्रत्येक पुराण इन्हीं पांच भागों अर्थात् सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश ,मनवन्तर और वंशानुचरित में विभक्त हैं। कुल पुराणों की संख्या 18 हैं – 1. ब्रह्म पुराण, 2. पद्म पुराण, 3. विष्णु पुराण, 4. वायु पुराण, 5. भागवत् पुराण, 6. नारदीय पुराण, 7. मार्कण्डेय पुराण, 8. अग्नि पुराण, 9. भविष्य पुराण, 10. ब्रह्मवैवर्त पुराण, 11. लिंग पुराण, 12. वराह पुराण, 13. स्कन्द पुराण, 14. वामन पुराण, 15. कर्म पुराण, 16. मत्स्य पुराण, 17. गरूड़ पुराण और 18. ब्रह्मण्ड पुराण।

इन पुराणों में विष्णु, मत्स्य, वायु, ब्रह्मण्ड तथा भागवत् पुराण सर्वाधिक ऐतिहासिक महत्व के हैं क्योंकि इनमे राजाओं की वंशावलियां पायी जाती है। अठारह पुराणों में सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रमाणिक मत्स्य पुराण हैं इसके द्वारा सातवाहन वंश के विषय में जानकारी मिलती हैं इसके अतिरिक्त विष्णु पुराण से मौर्य वंश एवं गुप्त वंश की एवं वायु पुराण से शुंग एवं गुप्त वंश के विषय पुराण से मौर्य वंश एवं गुप्तवंश के विष्य में विशेष जानकारी मिलती हैं । इस प्रकार पुराणों से हमें शिशुनाग, नन्द, मौर्य, शुंग, सातवाहन एवं गुप्त वंश के विषय में ज्ञान होता हैं। मार्कण्डेय पुराण मुख्यतः देवी दुर्गा से सम्बन्धित है। इसी में **'दुर्गा शप्तशती'** नामक अंश शामिल है। अग्निपुराण में तांत्रिक पद्धति का उल्लेख है। इसी पुराण में गणेश पूजा का प्रथम बार उल्लेख मिलता है।

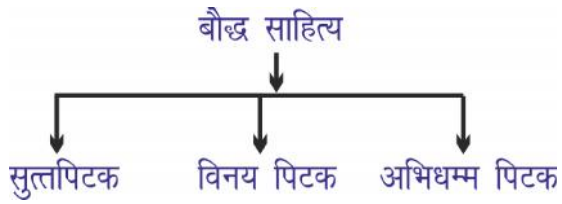

बौद्ध साहित्य को 'त्रिपिटक' कहा जाता है। महात्मा बुद्ध के परिनिर्वाण के उपरान्त आयोजित विभिन्न बौद्ध संगीतियों में संकलित किए गए त्रिपिटक (संस्कृति त्रिपिटक) सम्भवतः सर्वाधिक प्राचीन धर्मगनथ है। **वुलर** एवं **रीज डेविड्ज** महोदय ने **'पिटक** का शाब्दिक अर्थ **टोकरी** बताया है। त्रिपिटक हैं।– 1. सुत्तपिटक, 2. विनय पिटक और 3. अधिधम्म पिटक।

Call us : 9721026382, 9717413295, 9170509670, 9170509671, 9670365889, 8736093317, 7860949547, 7388655387, 7880947856, 6389318812, 7081865829, 9918100665
Whatsapp us : 9721026382, 9717413295, 9170509670, 9170509671, 9670365889, 8736093317, 7860949547, 7388655387, 7880947856, 6389318812, 7081865829, 9918100665

सुत्तपिटक– सुत्त का शाब्दिक अर्थ है– धर्मोपदेश। बुद्ध के धार्मिक विचारों एवं उपदेशों के संग्रह वाला गद्य–पद्य मिश्रित यह पिटक सम्भवतः त्रिपिटकों में सर्वाधिक बड़ा एवं श्रेष्ठ है। यह पिटक पांच निकायों में विभाजित हैं, जो इस प्रकार हैं–
1. दीघ्घनिकाय, 2. मज्झिकाय, 3. संयुक्त निकाय, 4. अंगुत्तर निकाय और 5. खुद्दक निकाय।
(क) दीघ्घनिकाय– गद्य एवं पद्य दोनों में रचित इस निकाय में बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का समर्थन एवं अन्य धर्मो के सिद्धान्तों का खण्डन किया गया है। इस निका य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सुत्त है– **'महापरिनिब्बानसुत्त'** । इस निकाय में महात्मा बुद्ध के जीवन के आखिरी जीवन, अन्तिम उपदेशों, मृत्यु तथा अन्त्यष्टि का वर्णन किया गया है।
(ख) मज्झिम निकाय– इस निकाय में महात्मा बुद्ध को कहीं साधारण मनुष्य के रूप में कहीं अलौकिक शक्ति वालें दैव रूप में वर्णित किया गया है।
(ग) संयुक्त निकाय– गद्य एवं पद्य दानों शैलियों के प्रयोग वाला यह निकाय अनेक 'संयुक्तों' का संकलन मात्र है।
(घ) अंगुत्तर निकाय– 11 निपातों से युक्त इस निकाय में महात्मा बुद्ध द्वारा भिक्षुओं को उपदेश में कही जाने वाली बातों का वर्णन है। इस निकाय में छठीं शताब्दी ई. पू. के सोलन महाजनपदों का उल्लेख मिलता है।
(ङ) खुद्दक निकाय– भाषा, विषय एवं शैली की दृष्टि से सभी निकायों से अलग, लघु ग्रन्थों के संकलन वाला यह निकाय अपने आप में स्वतंत्र एवं पूर्ण है। इसके कुछ अन्य प्रकार हैं – खुद्दक पाठ, धम्मपद, उदान, इतिबुत्तक, सुत्तनिपात, विमानवत्थु, पेतवत्थु, थेरगाथा, जातक, निद्देश, प्रतिसंभिदामग्डा, अपदान, बुद्धवंश तथा चरियापिटक। जातकों में बुद्ध के पूर्व जन्म से सम्बन्धित करीब 500 कहानियों का संकलन है।
सुत्तपिटक को बौद्ध धर्म का **'इनसाक्लोपीडिया'** भी कहा जाता है।
2. विनय पिटक– इस ग्रन्थ में बौद्ध मठों में रहने वाले भिक्षु–भिक्षुणियों के अनुशासन सम्बन्धी नियम दिये गए हैं। बौद्ध संघ की कार्यप्रणाली की वयवस्था भी इसी ग्रन्थ में उल्लिखित है। यह पिटक तीन भागों में विभक्त है– (क) पातिमोक्ख, (ख) सुत्त विभंग, (ग) खन्धक और (घ) परिवार।
(क) पातिमोक्ख (प्रतिमोक्ष) अनुशासन संबंधी नियमों तथा उसके उल्लघनो पर किए जाने वाले प्रायश्चितों का संकलन है।
(ख) सुत्त विभंग का शाब्दिक अर्थ है– 'सूत्रों (पातिभोक्ख के सूत्र) पर टीका'। इसके दो भाग **महाविभंग** एवं **भिक्खुनी विभंग** हैं **महाविभंग** में बौद्ध भिक्षुओं के लिए एवं भिक्खुनी विभंग में बौद्ध भिक्षुणियों हेतु नियमों का उल्लेख है।
(ग) खन्धक में मठ या सघ निवासियों के जीवन के संदर्भ में विधि–निषेधों की विस्तृत व्याख्या की गयी हैं खन्धक के दो अनय भाग– महावग्ग एवं चुल्लवग्ग हैं महावग्ग में संघ के अत्यधिक महत्वपूर्ण विषयों का उल्लेख हैं इसमें कुल 10 अध्याय है। चुल्लवग्ग में 12 अध्याय हैं इसमें वर्णित विष्य कम महत्वपूर्ण हैं।
(घ) परिवार– यह प्रश्नोत्तर क्रम में हैं विनय पिटक का यह अंतिम ग्रन्थ है।
3. अधिधम्म पिटक– इस पिटक मे महात्मा बुद्ध के उपदेशों एवं सिद्धांतों तथा बौद्ध मतों की दार्शनिक व्याख्या की गयी है। बौद्ध परम्परा की ऐसी मान्यता है। कि इस पिटक का संकलन अशोक के समय में सम्पन्न तृतीय बौद्ध संगीति में मोग्गलपुत्त तिस्स ने किया। इस पिटक के अन्य सात ग्रन्थ– धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गलपन्नति, कथावत्थु, यमक और उत्थान हैं इन्हें सत्तपकरण कहा जाता है।
त्रिपिटकों के अतिरिकत पालिभाषा में लिखे गए कुछ अन्य **महत्वपूर्ण बौद्ध ग्रन्थ–** मिलिन्पन्हो, दीपवंश एवं महावंश है।
मिलिन्दपन्हों– इस ग्रन्थ से ईसा की प्रथम दो शताब्दियों के भातरीय जन–जीवन के विषय में जानकारी मिलती है। इस ग्रन्थ में यूनानी नरेश मिनेण्डर (मिलिन्द) एवं बौद्ध भीक्षु नागसेन के बीच बौद्ध मत पर वार्तालाप का वर्णन है।
दीपवंश– लगभग चतुर्थ शताब्दी ई. में रचित सिंहल द्वीप के इतिहास पर प्रकाश डालने वाला यह पहला ग्रंथ है।
महावंश– भदन्त महानामा द्वारा सम्भवतः 5वीं एवं 6वीं शती ई. में रचित इस ग्रंथ में मगध के राजाओं की क्रमबद्ध सूची मिलती है।
जातक– भगवान बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाओं के संकलन जातक कथाओं में किया गया है। जातकों की संख्या 549 है। संस्कृति भाषा में लिखित कुछ महत्वपूर्ण बौद्ध ग्रन्थों में महावस्तु एवं ललितविस्तार से महात्मा बुद्ध के जीवन के विषय में जानकारी मिलती हैं दिव्यावदान से परवर्ती मौर्य शासकों एवं शुंग वंश के विषय में जानकारी मिलती है। अश्वघोष, जो सम्राट कनिष्क के समकालीन थे, की रचनाओं बुद्धचरित, सौन्दरानन्द एवं सारिपुत्रकरण में प्रथम दो महाकाव्य एवं तीसरा नाटक है।

जैन साहित्य

ऐतिहासिक जानकारी हेतु जैन साहित्य भी बौद्ध साहित्य की ही तरह महत्वपूर्ण है। अब तक उपलब्ध जैन साहित्य प्राकृत एवं संस्कृत भाषा में मिलते हैं। जैन साहितय, जिसे 'आगम' (अंग) कहा जाता है, इनकी संख्या 12 बतायी जाती हे। आगे चलकर

Log in. targetwithalok.in for
General Studies and Current Affairs Notes

इनके उपांग भी लिखे गये । आगमों के साथ–साथ जैन ग्रन्थों में 10 प्रकीर्ण, 6 छेद सूत्र, एक नंदि सुत्र, एक अनुयोगद्वार एवं चार मूलसूत्र हैं। इन आगम गन्थों की रचना संभवतः श्वेताम्बर साम्प्रदाय के आचार्यों द्वारा महावीर स्वामी की मृत्यु के बाद की गयीं इनकी कुल संख्या 12 है।

जैन साहित्य में पुराणों का भी महत्वपूर्ण स्थान है, जिन्हें 'चरित' भी कहा जाता है। ये प्राकृत, संस्कृत तथा अपभ्रंश तीनों भाषाओं में लिखे गए हैं इनमें पद्मपुराण, हरिवंशपुराण, आदिपुराण इत्यादि उल्लेखनीय हैं जैन पुराणों का समय छठी शताब्दी के सोलहवी–सत्रहवीं शताब्दी तक निर्धारित किया गया है।

जैन ग्रन्थों में परिशिष्टपर्वन, भद्रबाहुचरित, आवश्यकसूत्र, आचारांगसूत्र, भागवतीसूत्र, कालिकापुराण आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनसे ऐतिहासिक घटनाओं की सूचना मिलती है।

लौकिक साहित्य

इस प्रकार के साहित्य के अन्तर्गत ऐतिहासिक एवं समसामयकि साहित्य आते है, ऐसे साहित्य को धर्मेत्तर साहितय भी कहते है। इस प्रकार की कृतियों से तत्कालीन भारतीय समाजके राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास को जानन में काफी मदद मिलती है। ऐसी रचनाओं में सर्वप्रथम उल्लेख अर्थशास्त्र का किया जाता है।

1. अर्थशास्त्र– सम्भवतः आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) द्वारा रचित इस कृति को भारत का पहला राजनीति का ग्रंथ माना जाता हैं लगभग 6000 श्लोकों वाले इस ग्रन्थ (अर्थशास्त्र) से मौर्यकालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति की स्पष्ट जानकारी मिलती है। 15 खण्डों में विभाजित इस ग्रन्थ का द्वितीय एवं तृतीय खण्ड सर्वाधिक प्राचीन है।

2. मुद्राराक्षस– चौथी शती का उत्तरार्द्ध एवं पांचवीं शती. ई. के पूर्वार्द्ध में विशाखदत्त द्वारा रचित इस ग्रन्थ से चन्द्रगुप्त मौर्य एवं उनके गुरू चाणक्य के वष्यि में और साथ ही नंद वंश के पतन एवं मौर्य वंश की स्थापना के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है।

3. पाणिनिकृत अष्टाध्यायी एवं **महर्षि पतंजलि** प्रणीत **महाभाष्य** वैसे तो व्याकरण का ग्रन्थ माने जाते हे। किंतु इन ग्रन्थों में कहीं–कहीं राजाओं महाराजाओं एवं जनतंत्रों के घटनाचक्र का विवरण भी मिलता है।

4. गार्गीसंहिता– प्रथम शताब्दी के लगभग लिखी गयी इस पुस्तक में यूनानी आक्रमण का उल्लेख मिलता है।

5. मालविकाग्निमित्रम्– चौथी शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं पांचवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कालिदास द्वारा रचित इस संस्कृत ग्रन्थ से पुष्यमित्र शुंग एवं उसके पुत्र अग्निमित्र के समय के राजनीतिक घटनाचक्र तथा शुंग एवं यवन संघर्ष का उल्लेख मिलता है।

6. हर्षचरित– सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में संस्कृत गद्य साहित्य के विद्वान सम्राट हर्ष के राजकवि बाणभट्ट द्वारा रचित इस ग्रन्थ से हर्ष के जीवन एवं हर्ष के समय में भारत के इतिहास पर प्रचुर प्रकाश पड़ता हैं।

7. कामन्दकीय नीतिशास्त्र– 6वीं सातवीं शताब्दी के लगभग कामन्दक द्वारा इस ग्रन्थ की रचना की गयी। इससे उस समय के आचार–व्यवहार के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

8. बृहस्पतिय अर्थशास्त्र– कौटिल्य के अर्थशास्त्र के समान ही बृहस्पति ने भी –अर्थशास्त्र' नामक ग्रंथ की रचना की। इसका रचनाकाल 900–1000 ई. माना जाता हैं इस ग्रन्थ में राजकीय कर्तव्यों का उल्लेख किया गया है।

9. स्वप्नवासवदत्तम्– तीसरी शताब्दी ई. में महाकवि भास द्वारा रचित इस कृति से वत्सराज उदयन एवं अवन्ति नरेश चण्ड प्रद्योत के सम्बन्धों का उल्लेख मिलता है।

10. मंजूश्रीमूलकल्प– इस ग्रन्थ में 700 से 750 ई. तक के भारतीय इतिहास का विवरण मिलता है। यह ग्रंथ बौद्ध धर्म की महायान शाखा से भी सम्बन्धित है।

11. मृच्छकटिकम– शुद्रक द्वारा रचित इस नाटक से गुप्तकालीन सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी मिलती है।

12. नवसाहसांकचरित– ग्यारहवीं शदी. ई. में पद्मगुप्त परिमल द्वारा रचित इस ग्रन्थ से परमारवंश, सिंधुराज, नवसाहसांक के इतिहास के विषय में जानकारी मिलती है। इस ग्रन्थ को संस्कृत 5 साहित्य का प्रथम ऐतिहासिक महाकाव्य माना जाता है।

13. राजतरंगिणी– 1148 से 1150 के बीच इस ग्रन्थ की रचना कल्हण ने की। कश्मीर के इतिहास पर आधारित इस ग्रन्थ की रचना मे कल्हण ने ग्यारह अन्य ग्रन्थों का सहयोग लिया है। जिसमें अब केवल नीलमत पुराण ही उपलब्ध हैं। यह ग्रन्थ संस्कृत साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं के क्रमबद्ध इतिहास लिखने का प्रथम प्रयास हैं इसमें आदिकाल से लेकर 1151 ई. के आरम्भ तक के कश्मीर के प्रत्येक शासक के काल की घटनाओं का क्रमानुसार विवरण दिया गया है।

14. विक्रमांकदेवचरित– 11वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस ग्रन्थ की रचना कश्मीरी कवि विल्हण ने की। इस ग्रन्थ से चालुक्थस राजवंश, विशेषकर, विक्रमादित्य षष्ठ के विषय में जानकारी मिलती हैं।

Call us : 9721026382 9717413295 9170509670 9170509671 9670365889 8736093317 7860949547 7388655387 7880947856 6389318812 7081865829 9918100665
Whatsapp us : 9721026382 9717413295 9170509670 9170509671 9670365889 8736093317 7860949547 7388655387 7880947856 6389318812 7081865829 9918100665

15. कुमारपालाचरित– लगभग 1089–1173 ई. के बीच इस ग्रन्थ की रचना हेमचन्द्र ने की थी। 20 सगोर्क में विभाजित इस ग्रन्थ से गुजरात के चालुक्यवंशीय शासकों के विसतत इतिहास की जानकारी मिलती है। बीस सर्गो में प्रथम बारह सर्ग संस्कृत भाषा में एवं अंतिम आठ सर्ग प्राकृत भाषा में लिखे गये हैं इस ग्रन्थ को द्वयाश्रय काव्य भी कहा जाता है।

16. प्रबन्धचिन्तामणि– 1305 ई. में इसकी रचना मेरूत्तुंगाचार्य ने की। यह ग्रन्थ जैन साहित्य का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह पांच खण्डों में विभाजित हैं इन खण्डों से क्रमशः विक्रमांक, सातवाहन मूलराज, मुंज, नृपति भोज, सिद्धराज, जयसिंह, कुमार पाल, लक्ष्यण सेन, जययन्द्रआदि के विषय में जानकारी मिलती है।

17. कीर्तिमौमुदी– सोमेश्वर द्वारा रचित इस काव्य से चालुक्यवंशीय इतिहास के विषय में जानकारी मिलती है।

18. बसन्तविलास– महाकवि वालचन्द्र द्वारा रचित चौदह सर्गो वाले इस ग्रन्थ मे वास्तुपाल के उदारवादी कार्यो का उल्लेख मिलता है। साथ ही साथ चालुक्य वंशीय राजनति के बारे में विवरण मिलते हैं।

19. मत्तविलास प्रहसन– पल्लव नरेश मर्हेन्द्र वर्मा द्वारा 7वीं शती में रचित इस ग्रन्थ से तत्कालीन सामाजिक एवं धार्मिक जीवन के बारे में विवरण मिलता है।

20. अवनितसुन्दी कथा– महाकवि दण्डी द्वारा रचित इस ग्रन्थ से पल्लवों के इतिहास के विषय में जानकारी मिलती है।

21. पुथ्वीराजविजय– 1191–93ई. के बीच इस ग्रन्थ की रचना कश्मीरी पण्डित जयानक ने की। इस ग्रन्थ से पृथ्वीराज तृतीय के विषय में जानकारी मिलती है।

22. गौड़वाहो– वाकपतिराज द्वारा प्राकृत भाषा में रचित इस ग्रन्थ से कन्नौज नरेश यशोवर्मा की विजयों के विषय में जानकारी मिलती है। दक्षिण भारत का प्रारम्भिक इतिहास 'संगम साहित्य' से ज्ञात होता है। सुदूर दक्षिण के पल्लव और चोल शासकों का इतिहास नन्दिक्कलम्बकम, कलिंगत्तुपर्णि, चोल चरित आदि से प्राप्त होता है।

विदेशियों के विवरण

विदेशी यात्रियों एवं लेखकों के विवरण से भी हमें भारतीय इतिहास की जानकारी मिलती हैं इनको तीन भागों में बांट सकते हैं–

1. यूनानी–रोमन लेखक
2. चीनी लेखक और
3. अरबी लेखक।

यूनानी लेखकों को तीन भागों में बांटा जा सकता है–

1. सिकन्दर के पूर्व के यूनानी लेखक
2. सिकन्दर के समकालीन यूनानी लेखक
3. सिकन्दर के बाद के यूनानी लेखक।

टेसियस और **हेरोडोटस** यूनान और रोम के प्राचीन लेखकों में से है। टेसियस ईरानी राजवैध था, उसने भारत के विषय में समस्त जानकारी ईरानी अधिकारियों से प्राप्त की थी। हेरोडोटस, जिसे **'इतिहास का पिता'** कहा जाता है, ने 5वीं शताब्दी ई.पू. में 'हिस्टोरिका' नामक पुस्तक की रचना की, जिसमें भारत और फारस के सम्बन्धों का वर्णन किया गया है।

नियार्कस, आनेसिक्रिटस ओर अरिस्टोवुलस ये सभी लेखक सिकन्दर के समकालीन थे।

सिकन्दर के बाद के लेखकों में महत्वपूर्ण था मेगसथनीज जो यूनानी राजा सेल्यूकस का राजदूत था। उसने चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में करीब 14 वर्ष रहा। उसने **'इण्डिका'** नामक ग्रन्थ की रचना की जिसमें तत्कालीन मौयवंशीय समाज एवं संस्कृति का विवरण दिया गया है। डाइमेकस, सीरियन नरेश अन्तियोकस का राजदूत था। जो बिन्दुसार के राजदरबार में काफी दिनों तक रहा। डायोनिसियस मिस्त्र नरेश टॉलमी फिलाडैल्फस के राजदुत के रूप में काफी दिनों तक सम्राट अशोक के राज दरबार में रहा था।

अन्य पुस्तकों में **'पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी'** लगभग 150 ई. के आसपास टॉलमी का भूगोल, प्लिनी का नेचुरल हिस्टोरिका (ई. की प्रथम सदी) महत्वपूर्ण है, 'पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' ग्रन्थ जिसकी रचना 80 से 115 ई. के बीच हुई है, में भारतीय बंन्दरगाहों एवं व्यापारिक वस्तुओं का विवरण मिलता है। प्लिनी के 'नेचुरल हिस्टोरिका' से भारतीय पशु पेड़–पौधों एवं खनिज पदार्थो की जानकारी मिलती है।

चीनी लेखक– चीनी लेखकों के विवरण से भी भारतीय इतिहास पर प्रचुर प्रभाव पड़ता हैं सभी चीनी यात्री बौद्ध मतानुयायी थे और वे इस धर्म के बारे में कुछ विशेष जानकारी के लिए भारत आये थे। चीनी बौद्ध यात्रियों में से प्रमुख थे– फाह्यान, ह्वूली, इत्सिंग, मल्वानलितन, चाऊ–जू–कुआ आदि।

Log in. targetwithalok.in for
General Studies and Current Affairs Notes

फाह्यान गुप्त नरेश चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य (375–415 ई.) के समय में भारत आया था। उसने तत्कालीन भारत की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, स्थिति पर प्रकाश डाला,। फाह्यन ने विशेष रूप से बौद्ध धर्म पर लिखा है। उसका यात्रा विवरण **'फो क्यो की'** के नाम से जाना जाता है।

ह्वेनसांग कन्नौज के राजा हर्षवर्धन (606–47ई.) के शासनकाल में भारत आया। इसने करीब 10 वर्षो तक भारत में भ्रमण किया। उसने 6 वर्षो तक नालन्दा विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। ह्वेनसांग के अनुसार नालन्दा विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 10,000 थी। उसकी भारत यात्रा का वृतान्त सी–यू–की नामक ग्रन्थ से जाना जाता है जिसमें लगभग 138 देशों के यात्रा विवरण का जिक्र मिलता है। इस ग्रन्थ से हर्षकालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है। ह्यूली ह्वेनसांग का मित्र था जिसने ह्वेनसांग की जीवनी लिखी। इस जीवनी में उसने तत्कालीन भारत पर भी प्रकाश डाला। चीनी यात्रियों में सर्वाधिक महत्व ह्वेनसांग का ही है। उसे **'प्रिंस ऑफ पिलग्रिम्स'** अर्थात यात्रियों का राजकुमार कहा जाता है।

इत्सिंग 613–715 ई. के समय भारत आया। उसने नालन्दा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा उस समय के भारत पर प्रकाश डाला।

म्त्वालिन ने हर्ष के पूर्वी अभियान एवं चाऊ–जू–कुआ ने चोल कालीन इतिहास पर प्रकाश डाला।

अरबी लेखक– पूर्व मध्यकालीन भारत के समाज और संस्कृति के विषयों में हमें सर्वप्रथम अरब व्यापारियों एवं लेखकों से विवरण प्राप्त होता है। इन व्यापारियों और लेखकों में मुख्य है– अलबेरूनी, सुलेमान, और अलमसूदी।

अलबेरूनी, जो **अबूरिहान** नाम से जाना जाता था, 973 ई. में ख्वारिज्म (खीवा) में पैदा हुआ। 1017 ई. में ख्वारिज्म को महमूद गजनवी द्वारा जीते जाने पर अलबेरूनी को उसने राज्य ज्योतिषी के पद पर नियुक्त किया। बाद में महमूद के साथ अलबेरूनी भारत आया। इसने अपनी पुस्तक **'तहकीक–ए–हिन्द'** अर्थात् **किताबुल हिंद** में राजपूतकालीन समाज, धर्म, रीति–रिवाज आदि पर सुन्दर प्रकाश डाला।

उपर्युक्त विदेशी यात्रियों के विवरण के अतिरिक्त कुछ फारसी लेखकों के विवरण भी प्राप्त होते है। जिनसे भारतीय इतिहास के अध्ययन में काफी सहायता मिलती है। इसमें महत्वपूर्ण हैं– फिरदौसी (940–1020 ई.) कृत शाहनामा (ठववा वज्ञिपदह), रशीदुद्दीन कृत **'जमीएत– अल–तवारिख'** अली अहमद कृत **'चचनामा'** मिनहाज–उल–सिराज कृत **'तबकात–ए–नासिरी'** जियाउद्दीन बरनी कृत **'तारीख–ए–फिरोशाही'** एवं अबुल फजल कृत **'अकबरनामा'** आदि।

यूरोपीय यात्रीयों में 13वीं शताब्दी में **वेनिस** (इटली) से आए सुप्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो द्वारा दक्षिण के पाण्ड्य राज्य के विषय में जानकारी मिलती है।

भारोपीय परिवार की प्राचीनतम भाषा संस्कृत है। इस संबंध में यह ग्रीक, लैटिन और ईरानी भाषाओं से प्राचीन है।

पुरातत्व

1. अभिलेख 2. सिक्के 3. स्मारक एवं भवन 4. मूर्तियां 5. चित्रकला

अभिलेख– इतिहास निर्माण में सहायक पुरातत्व सामग्री में अभिलखों का महत्वपूर्ण स्थान है। ये अभिलेख अधिकांशतः स्तम्भों, शिलाओं , ताम्रपत्रों, मुद्राओं, पात्रों, मूर्तियों, गुहाओं आदि में खुदे हुए मिलते है। यद्यपि प्राचीनतम् अभिलेख मध्य एशिया के 'बोगजकोई' नामक स्थान से करीब 1400 ई. पू. में पाये गए जिनमें अनेक वैदिक देवताओं –इन्द्र, मित्र, वरूण, नासत्य आदि का उल्लेख मिलता है। फिर भी, अपने यथार्थ रूप में अभिलेख हमें सर्वप्रथम अशोक के शासनकाल में ही मिलते हे। एक अभिलेख, जो हैदराबाद के मास्की नामक स्थान पर स्थित हैं, में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख मिलता हैं इसके अतिरिक्त गुर्जरा (म.प्र.) पानगुडइया (म.प्र.) से प्राप्त लेखों में भी अशोक का नाम मिलता है। अन्य अभिलेखों में उसको देवताओं का प्रिय 'प्रियदर्शी' राजा कहा गया है। अशोक के अभिलेख मुख्यतः ब्राह्मी, खरोष्ठी, तथा अरमाइक लिपियों में मिलते हैं। जिसमें अधिकांश **ब्राह्मी लिपि** में खुदे हुए है। इस लिपि को बायी से दायी ओर लिखा जाता हे। पश्चिमोत्तर प्रान्त में प्रयुक्त होने वाली **'खरोष्ठी लिपि'** दायीं ओर से बायीं ओर लिखी जाती थी। पाकिस्तान और अफगानिस्तान में पाये गए अशोक के अभिलेखों में प्रयुक्त **आरमाइक** व **यूनानी** थे।

Call us : 9721026382 9717413295 9170509670 9170509671 9670365889 8736093317 7860949547 7388655387 7880947856 6389318812 7081865829 9918100665
Whatsapp us : 9721026382 9717413295 9170509670 9170509671 9670365889 8736093317 7860949547 7388655387 7880947856 6389318812 7081865829 9918100665

अशोक के बाद अभिलेखों की परम्परा से जुड़े अन्य अभिलेख इस प्रकार हैं खारवेल का हाथीगुम्फा, अभिलेख, शकक्षत्रप प्रथम रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख, सातवाहन हहनरेश पुलुवामी का नासिक गुहालेख, हरिषेण द्वारा लिखित समुद्रगुप्त का प्रयास स्तम्भ लेख, मालव नरेश यशोवर्मन का मन्दसौर अभिलेख, चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल अभिलेख, प्रतिहार नरेश भोज का गवालियर अभिलेख, सकन्दगुप्त का भितरी तथा जूनागढ़ लेख, बंगाल के शासक विजय सेन का देवपाड़ा अभिलखे इत्यादि। कुछ गैर सरकारी अभिलेख है। जैसे यवन राजदूत **हेलियोडोरस का बेसनगर** (विदिशा) से प्राप्त गरूड़ लेख। इससे द्वितीय शताब्दी ई.पू. में भारत में भागवत धर्म के विकसित होने के साक्ष्य मिलते हैं। मध्य प्रदेश के एरण से प्राप्त वराह प्रतिमा पर हूण राजा तोरमाण के लेखों का विवरण है।

मुद्रायें– भारतीय इतिहास अध्ययन में मुद्राओं की अतीव महत्ता हैं। भारत की प्राचीनतम मुद्राएं छठीं शती ई.पू. में प्रचलित हुई। इन पर लेख नहीं होते थे। कुछ प्रतीक जैसे पर्वत, वृक्ष, पशु, पक्षी, मानव, पुष्प, ज्यामितीय आकृति आदि अंकित रहते थे। इन्हें आहात मुद्रा (पंच मार्क्ड क्वायन्स) कहा जाता था। सर्वप्रथम भारत में शासन करने वाले यूनानी शासकों के मुद्राओं पर लेख एवं तिथियां उत्कीर्ण मिलती है। सर्वाधिक मुद्रांए उत्तर मौर्यकाल में मिलती हैं जो प्रधानतः सीसे, पोटीन, तांबे, कांसे, चांदी और सोने की होती थीं। कुषाणों के समय में सर्वाधिक शुद्ध सुवर्ण मुद्राएं प्रचलन में थी, पर सर्वाधिक सुवर्ण मुद्राएं गुप्त काल में जारी की गयी। समुद्रगुप्त की कुछ मुद्राओं पर 'यूप' कुछ पर 'अश्वमेघ यज्ञ' और कुछ पर वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।

कनिष्क की मुद्राओं से यह पता चलता है। कि वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था। सातवाहन नरेश सातकर्णि की एक मुद्म पर जलपोत का चित्र उत्कीर्ण है जिससे अनुाामन लगाया जाता हैं कि उसने समुद्र विजय की थी। चन्द्रगुप्त द्वितीय की व्याघ्रशैली की मुद्राओं से उसकी पश्चिमी भारत के शकों की विजय सूचित होती है।

स्मारक एवं भवन– इतिहास निर्माण में भारतीय स्थापत्यकारों, वास्तुकारों और चित्रकारों ने अपने हथियार, छेनी, कन्नी और तुलिका के द्वारा विशेष योगदान दिया। इनके द्वारा निर्मित प्राचीन इमारतें, मंदिर मूर्तियों के अवशेषों से भारत की प्राचीन सामाजिक, आर्थिक, एवं धार्मिक परिस्थितियों का ज्ञान होता है। खुदाई में मिले महत्वपूर्ण अवशेषों में हड़प्पा सभ्यता पाटलीपुत्र की खुदाई में चन्द्रगुप्त मौर्य के समय लकड़ी के बने राजप्रसाद के ध्वंसावशेष, कौशाम्बी की खुदाई से महाराज उदयन के राजप्रसाद एवं घाषितराम बिहार के अवशेष अंतरजीखेड़ा में खुदाई से लोहे के प्रयोग के साक्ष्य पांडिचेरी के अरिकामेडु में खुदाई से रामन मुद्राओं, बर्तन आदि के अवशेषों से तत्कालीन इतिहास एवं संस्कृति की जानकारी प्राप्त होती है। उस समय के मंदिर निर्माण की प्रचलित शैलियों में '**नागर–षैली**' उत्तर भारत में प्रचलित थी। जबकि **द्रविड़ शैली** दक्षिण भारत में प्रचलित थीं दक्षिणापथ में निर्मित वे मंदिर जिसमें नागर एवं द्रविड़ दोनों शैलियों का समावेश है। उसे 'वेसर शैली' कहा गया हैं। 8वीं शताब्दी में जावा में निर्मित बोरोबुदूर मंदिर से बौद्ध धर्म की पहचान शाखा के प्रचलित होने का प्रमाण मिलता है।

मूर्तियां– प्राचीन काल में मूर्तियों का निर्माण कुषाण काल से आरम्भ होता है। कुषाणों, गुप्त शासकों एवं उत्तर गुप्तकाल मे निर्मित मूर्तियों के विकास में जनसामान्य की धार्मिक भवानाओं का विशेष योगदान रहा है। कुषाणकालीन मूर्तियां स्वाभाविक्ता से ओत–प्रोत है। भरहुत, बोधगया, सांची और अमरावती में मिली मूर्तियां, मूर्तिकला में जनसामान्य के जीवन की अति सजीव झांकी प्रस्तुत करती है।

चित्रकला– चित्रकला से हमें उस समय के जीवन के विषय में जानकारी मिलती है। अजंता के चित्रों में मानवीय भावनाओं की सुन्दर अभिव्यक्ति मिलती है। चित्रों में 'माता और शिशु' या 'मरणशील राजकुमारी' जैसे चित्रों से गुप्तकाल की कलात्मक पराकाष्ठा का पूर्ण प्रमाण मिलता है।

Log in. targetwithalok.in for
General Studies and Current Affairs Notes